एक कबूतर का मर्सिया

विनता विश्वनाथन

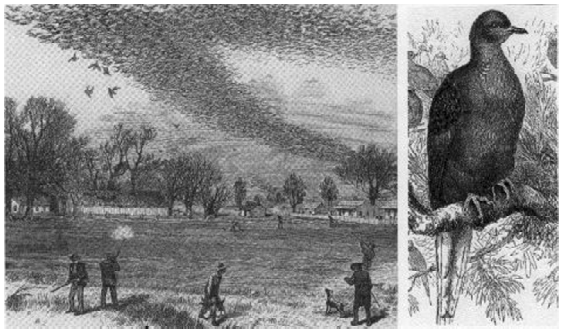

2014 मार्था के गुज़र जाने की शताब्दी थी। 1 सितम्बर 1914 को मार्था चल बसी थी। वह चार साल से अकेले ही जी रही थी। न उसे कोई खास बीमारी थी और न ही उसके साथ कोई हादसा हुआ था। उसकी उम्र 29 साल थी लेकिन वह बुढ़ापे के कारण मर गई। उसका गुज़र जाना कोई बड़ी बात न होती अगर वह अपनी प्रजाति की आखिरी सदस्य न होती। मार्था अमेरिका के सिनसिनैटी चिड़ियाघर की एक पैसेंजर पिजन थी और उसकी मुत्यु के साथ ही कबूतर की यह प्रजाति Ectopistes migratorius विलुप्त हो गई।

किसी प्रजाति का विलुप्त होना अपने आप में आश्चर्य की बात नहीं है - ज़्यादातर विकसित प्रजातियों का यही हाल हुआ है और होता रहेगा। लेकिन मार्था के गुज़र जाने की शताब्दी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्यों के कारण एक प्रजाति कितनी तेज़ी से और नाटकीय रूप से खत्म हो सकती है, उसका एक उदाहरण है पैसेंजर पिजन।

19वीं सदी के मध्य में पैसेंजर पिजन अमेरिका में सबसे अधिक संख्या में पाया जाने वाला पक्षी था। इस बात का बढ़िया एहसास हमें मेजर डब्लू. रॉस किंग के *दी स्पोर्ट्समैन एण्ड नेचुरलिस्ट* पत्रिका में छपे विवरण से मिलता है। वे 1860 में अमेरिका और कनाडा की सीमा पर नयागरा शहर के आसपास कहीं थे और उन्होंने कुछ ऐसे लिखा है -

''मैं यह देख कर बिलकुल अचम्भित था कि लाखों कबूतरों से हवा भरी थी और सूरज एकदम छिप गया था। कबूतर मंडरा नहीं रहे थे, एक सीधी पट्टी में तेज़ी से तीर जैसी उड़ान से आगे बढ़ रहे थे। वे एक ऐसे झुंड में थे जो एक मील चौड़ा था और जिसका अंत न आगे दिख रहा था न पीछे।'

पैसेंजर पिजन के इस झुंड को पार होने में 14 घंटे लगे, और किंग का अनुमान था कि 95 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ते हुए पक्षियों की इस पट्टी की लम्बाई 480 कि.मी. थी। सिर्फ किंग ही नहीं, कई अन्य लोग ऐसी चौथाई था।

19वीं सदी में पैसेंजर पिजन के झुंड 1 अरब पक्षियों तक के हुआ करते थे। वे विशाल झुंडों में खाने की खोज में निकलते और इनके कारण उस जगह पर घंटों तक अंधेरा-सा छा जाता। पेड़ों पर जब कई सारे कबूतर एक साथ आराम करने के लिए बैठते तो पेड़ों की डालें टूट जातीं। 95 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ने वाले इन प्रवासी पक्षियों की खासियत लम्बी उड़ानें थीं और मध्य व पूर्वी अमेरिका व कनाडा में इनको देखना एक सामान्य बात हुआ करती थी। फिर महज़ चालीस सालों में इनका नामो-निशान नहीं रहा।

इसके दो कारण हैं और दोनों ही कारण मनुष्यों से जुड़े हैं। एक कारण था कि इन कबूतरों के प्राकृतवास (हैबिटेट), जो मध्य व पूर्वी उत्तर अमेरिका के जंगल थे उनको काफी हद तक बरबाद किया गया। इन जंगलों के साथ कटे वे बड़े-बड़े पेड़ जिनके भरपूर सख्त फल-बीजों (जैसे बीचनट, ऐकॉर्न इत्यादि) पर निर्भर थे ये पक्षी।

कई लोगों का मानना है कि जंगलों की बरबादी इन कबूतरों की विलुप्ति का एक कारण तो था मगर कम महत्वपूर्ण कारण था। सबसे बड़ा कारण था शौक और व्यापार के लिए शिकार। पैसेंजर पिजन का जिस मात्रा में शिकार होता था उसकी कल्पना करना आज मुश्किल होगा - एक-एक बार में सैकड़ों, हज़ारों की संख्या में इनका शिकार होता था। यह आसान था क्योंकि ये पक्षी न केवल हज़ारों के समूह में सफर करते थे बल्कि अक्सर हज़ारों की कॉलोनी में घोंसले बनाकर अंडे भी देते थे। इनका शिकार कर रहे थे कम से कम 1000 व्यावसायिक शिकारी जो इनकी हर नई ठहरने की जगह पहुंच जाया करते थे। 20वीं सदी के शुरुआती सालों में जब इनके व्यावसायिक शिकार

पर रोक लगाई गई, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। बचाने के लिए सिर्फ मार्था जैसे पैसेंजर पिजन बचे थे।

मरने के 100 साल बाद भी मार्था को याद करना हमारे लिए मायने रखता है। यह इसलिए कि काफी लोगों की मानसिकता है कि दुर्लभ प्रजातियों की सुरक्षा पर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए और पैसेंजर पिजन जैसी स्वाभाविक रूप से सामान्य प्रजातियों की तरफ हम कम ही ध्यान दे सकते हैं। कुछ हद तक शायद यह सही भी है लेकिन पैसेंजर पिजन से हमें यह सबक सीखने को मिलता है कि भयंकर परिस्थितियों में सामान्य प्रजातियां भी शीघ्र खत्म हो सकती हैं। पैसेंजर पिजन एक ऐसी प्रजाति थी जो सिर्फ विशाल झुंडों में रहना जानती थी। जब कम समय में ही उनके जंगल कटे तो उनके झुंड छोटे हो गए। उनके पास इन नई परिस्थितियों में सफलता के साथ जीने के पहले जैसे तरीके नहीं थे। और उनको इन परिस्थितियों में जीना सीखने (अनुकूलित होने) के लिए समय बिलकुल नहीं मिला।

यह तो सिर्फ पैसेजर पिजन की बात है - लगभग अचानक से इतनी ज़्यादा संख्या में पाए जाने वाले पक्षियों के एकदम खत्म हो जाने से पूर्वी अमेरिका के जंगली इकोसिस्टम पर क्या असर हुआ होगा, हम इसकी कल्पना मात्र कर सकते हैं। उन जानवरों का क्या जो इन पक्षियों को खाते थे, उन पेड़ों के फल-बीजों की क्या स्थिति हुई होगी जिन्हें ये पिजन खाते थे, उन अन्य पक्षियों का क्या जो खाने और जगह के लिए पैसेंजर पिजन के प्रतिद्वंदी थे? वह एक अलग ही दुनिया रही होगी जिसमें पैसेंजर पिजन उड़ा करते थे।

पैसेंजर पिजन की हद तक तो शायद नहीं, लेकिन दुनिया भर में कई जानवर ऐसे हैं जो विशाल झुंडों में रहते-घूमते हैं और केवल उन्हीं परिस्थितियों में रह-घूम सकते हैं। हमारे देश में देखें तो मराल (फ्लैमिंगो), फलभक्षी चमगादड़, कई समुद्री कछुए, सिकाडा ऐसे जीव हैं जो अपने जीवनकाल का कुछ या पूरा समय बड़े समूहों में बिताते हैं। हमें इनको सामान्य होने के कारण सुरक्षित नहीं मान लेना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***

फॉर्म 4 (नियम - 8 देखिए)

मासिक स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : (अरविन्द सरदाना)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462017
मुद्रक का नाम : (अरविन्द सरदाना)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462017
सम्पादक का नाम : सुशील जोशी
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 017
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर
स्वामित्व है : (अरविन्द सरदाना)
निदेशक, एकलव्य
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-10 शंकर नगर
बी. डी. ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 017

मैं अरविन्द सरदाना, निदेशक, एकलव्य यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

अरविन्द सरदाना,
निदेशक, एकलव्य

1 जनवरी 2015